>

Title: Regarding development of sports facilities in Kushinagar, Uttar Pradesh.

श्री विजय कुमार दुबे (कुशीनगर): महोदय, खिलाड़ी चाहे गांव से हो या महानगर से हो, वह किसी भी खेल से जुड़ा हो, अगर उसको उचित प्रशिक्षण, उचित संसाधन, उचित खेल के उपकरण मिलें, तो गांव, देहात से होते हुए भी वह राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच सकता है । मैं खेल से जुड़ा एक खिलाड़ी रहा हूं । मेरे अधीन खेलने वाला नरेन्द्र हिरवानी गोरखपुर, कुशीनगर छोड़कर इन्दौर चला गया, तो उसने वर्ल्ड रिकार्ड बना दिया । मैं कुशीनगर, गोरखपुर तक सीमित रहा, तो स्टेट लेवल तक का खिलाड़ी रह सका । हमारे कुशीनगर के हाटा तहसील के रधिया, देवरिया गांव से राष्ट्रीय स्तर के तैराक हैं, लेकिन वहां तरणताल की कोई सु**वि**धा नहीं है । वे देशी पोखर से तैर कर आज यहां तक पहुंचे हैं ।

हमारे जिला मुख्यालय पड़रौना में प्रदेश सरकार की तरफ से एक स्टेडियम है । इसमें न तो तरणताल है और न ही **क्रि**केट, हाकी या फुटबाल खेलने की कोई व्यवस्था है । वहां कोई प्र**शि**क्षक नहीं है । मैं आपके माध्यम से खेल मंत्री जी से मांग करता हूं कि कुशीनगर जिले में एक उच्च कोटि का बड़ा स्टेडियम बनाया जाए, जिसमें हर तरह की सुविधाएं हों, संसाधन हों, प्रशिक्षक हों, ताकि हमारे गांव क्षेत्र से भी निकल कर देवरिया के उमेश यादव की तरह राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच कर न केवल अपने जिले का नाम, बल्कि देश का नाम भी आगे बढ़ाने का कार्य करें । मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे शून्य काल में बोलने का अवसर दिया ।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मैं फिर आपसे आग्रह कर रहा हूं । यह आपका सदन है और इस सदन को चलाने की जिम्मेदारी आपकी है । कई

माननीय सदस्य अभी भी खड़े होकर सदन में बात करते हैं । चाहे माननीय प्रधान मंत्री हों या गृह मंत्री हों, जब माननीय मंत्री बोलते हैं, तो वे वहां खड़े रहते हैं, इंतजार करते हैं और जब माननीय मंत्री जी जवाब दे देते हैं, तब बैठते हैं । मैंने कई बार आग्रह किया है । मैं किसी माननीय सदस्य को इस व्यवस्था से बोलना नहीं चाहता हूं । मेरा आपसे फिर आग्रह है । अगर आप उचित समझेंगे कि हमें सदन में खड़े-खड़े बात करना है, तो मैं उस तरह का सदन चला सकता हूं । बैठे-बैठे बोलने की इजाजत का अगर सदन फैसला करता है, तो बैठे-बैठे बोलने का सदन भी चला सकता हूं । यह संसद है । हम इस संसद की गरिमा को विश्व स्तर पर पहुंचाना चाहते हैं । मेरा आपसे पुन: आग्रह है कि गैलरी पास है, दो कदम पर है । जिसको बात करनी है, बाहर जाकर बात कर ले । मैं इस सदन में किसी को खड़े होने और बातचीत करने नहीं दूंगा ।

श्री सुदीप बन्दोपाध्याय (कोलकाता उत्तर): आप धीरे-धीरे इनको कंट्रोल में लाइए, क्योंकि यह हैबिट तो पिछले कई सालों से है । ...(व्यवधान) एक दिन में आप बोलेंगे और सब सुधर जाएंगे, ऐसा नहीं है । But we agree with you. Your ideas are noble ideas. We will try to implement it.

माननीय अध्यक्ष : आप बैठ जाइए ।